

शिक्षा प्रशासक की समस्याएं

**PAPER APPEARED IN PARIKSHAK, A JOURNAL OF M.P. EDUCATION BOARD,
APRIL, 1990**

– डॉ. ए.के.पाण्डेय
प्राचार्य
परियोजना विद्यालय, शिक्षा नगर, ग्वालियर

शिक्षा सिखाने की एक सामाजिक प्रक्रिया है और प्रभावी शिक्षा के लिए प्रभावी प्रशासन की जरूरत महसूस की जाती है। प्रत्येक समुदाय या सामाजिक संगठन का अपना एक अलग परिवेश होता है। शिक्षा किसी सामाजिक संगठन के अनुरूप चलती है क्योंकि शिक्षण संस्था समाज के भीतर एक समाज है यह समाज को उसके व्यवहार, बदलाव और उसके गुणात्मक विश्लेषण की दिशा बताती है तथा खुद समाज के बदलाव के कारण अपने अन्दर बदलाव लाती है। शिक्षण संस्था जो कि एक सामाजिक संगठन है, निश्चित रूप से उसे सामाजिक उथल-पुथल से दूर होना चाहिए। लेकिन इसके लिए एक स्वच्छ शिक्षा प्रशासन की जरूरत होती है। शिक्षा प्रशासक तथा साधारण प्रशासक में यही अन्तर होता है कि पहला अपने तथा संस्था के सारे फार्मों के लिए खुद जिम्मेवार होता है जबकि दूसरे की जिम्मेदारियां बंटी होती है।

किसी भी शिक्षा संस्था से हम तब तक यह आशा नहीं कर सकते हैं कि वह सामाजिक तथा शिक्षात्मक विकास में योगदान करेगी जब तक कि वह एक अच्छे शिक्षा प्रशासक के द्वारा प्रशासित न हो। सफलता तथा असफलता की परिभाषा समय तथा स्थान के अनुसार बदलती रहती है लेकिन शिक्षा प्रशासन के अनुसार एक शिक्षा प्रशासक में शिक्षण संस्था को समझने की क्षमता जरूर होनी चाहिए। शिक्षा में बराबर ही प्रयोग होते रहे हैं और हमने देखा है कि साधारण प्रशासक अधिकांशतः शिक्षा प्रशासक के रूप में असफल रहे हैं। एक शिक्षा प्रशासक को अच्छा जन सम्पर्क अधिकारी होना पड़ता है। जो कि एक साधारण प्रशासक के सफलता की पहली कड़ी है और यही कारण है कि आज सैनिक

स्कूल के प्राचार्य भी बाहर के लिए जाते हैं जो कुछ समय पहले तक मिलीटरी शिक्षा के अधिकारी ही हुआ करते थे।

भारत के लिए शिक्षा प्रशासन एक नया शब्द है क्योंकि हम लोग यह मानते हैं कि एक अच्छा शिक्षक ही एक अच्छा शिक्षा प्रशासक हो सकता है। मैं इस बात को विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि अगर अपवाद को छोड़ दिया जाये तो यह विचार हमारी शिक्षा पद्धति के अनुकूल नहीं है। अगर प्रशासकीय गुणों की विवेचना की जाय तो हम यह देखेंगे कि शिक्षा प्रशासक के लिए भी व्यावसायिक प्रशासक की तरह प्रशासकीय गुणों को सिखाने वाली एक कोर्स की आवश्यकता है। प्रशासक जिसके चारों तरफ उसका अन्तर्गत आने वाले सभी विभाग एक निश्चित कक्ष में चक्कर काटते हैं। एक अच्छा प्रशासक हमेशा ही अपने और इन कक्षों के बीच की दूरी को कम नहीं होने देता है और इसके लिए उसे सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करना जरूरी है। अगर हम प्रशासकीय ढांचे को ध्यान में रखकर अपनी शिक्षण संस्था का विस्तार करें तो शायद हम भ विकासशील देशों की तरह शिक्षा के क्षेत्र में सफल हो सकते हैं तथा शिक्षा प्राप्त कर अपने यहां से उन देशों में जाने वालों (छतंपद कतंपद) की संख्या में कमी कर सकें।

शिक्षा प्रशासक के रूप में प्रशासक अपने अन्दर सभी गुणों का मनोवैज्ञानिक विकास कर पाता है। एक साथ मिलकर काम करने की कला जो शिक्षा प्रशासक में दिखाई पड़ती है, उसका उदाहरण दूसरी जगह देखने में नहीं मिलता है। शिक्षा प्रशासक एक अच्छे समन्वयक (ब.वतकपदंजवत) की तरह काम करता है। उसको विद्यार्थियों तथा सामाजिक चारदीवारी के बीच एक सामन्जस्य स्थापित करना पड़ता है। अगर यह किन्हीं कारणों से सम्भव नहीं हो पाता है तो इसका सीधा असर उस संस्था में पढ़ने वाले नये दिमाग (ल्वनदह मदहमत उपदक) पर पड़ता है। इस बात को हम न भूलें कि स्कूल की वह जगह है जहां से सामाजिक कुरीतियों की शुरुआत भी होती है। समाज शिक्षा प्रशासकों को उनकी

असफलताओं के लिए सिर्फ, उन्हें दोष नहीं दे सकता है। क्योंकि अगर कोई शिक्षा प्रशासक असफल होता है तो उसके लिए समाज भी उतना ही दोषी है जितना की वह खुद।

एक शिक्षा प्रशासक जिन परिस्थितियों में कार्य करता है वहां उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है तथा कठिनाइयों के बीच उसे संस्था को शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाने का ध्यान रहता है। इसके लिए वह कुछ बदलाव चाहता है। मनुष्य शुरू से ही बदलाव के विरुद्ध रहा है जब तक कि उसे उस बदलाव को सहने के लिए बाध्य न किया जाय और इस कार्य में समाज का उत्तरदायित्व शिक्षा प्रशासक से कम नहीं है। एक शिक्षा प्रशासक हमेशा यह ध्यान रखता है कि उसके सम्बन्ध सबसे मधुर हों। तभी वह अपने मिशन में सफल हो पायेगा। लेकिन परिस्थितियां अगर अनुकूल नहीं हो पाती हैं तो वह असफल हो जाता है। एक अच्छा शिक्षा प्रशासक अपने जीवन में जोखिम लेने से भी नहीं हिचकता है बशर्ते वह शिक्षा संस्था के हित में हो न कि किसी और रूप में। शिक्षण संस्थाओं में अभी भी सफल शिक्षा प्रशासकों की कमी है क्योंकि सामाजिक ढांचे में वे ठीक नहीं बैठ पाते हैं। प्रत्येक अभिभावक को खुश रखना, अपने साथ कार्य करने वाले शिक्षकों को खुश रखना तथा विशेषकर बच्चों को खुश रखना एक साधारण शिक्षा-प्रशासन के लिए आसानी से सम्भव नहीं है जब तक कि उसे इनमें से प्रत्येक का पूर्ण सहयोग न मिले।